जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

मुक्ति का मार्ग शान्ति का मार्ग है , तनाव का नहीं, व्यग्रता का नहीं।

- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-20

वर्ष : 25, अंक : 14 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (द्वितीय) 2002 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित -

पाँचवे आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का उद्घाटन

जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन) : आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की प्रेरणा से निर्मित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में रविवार दिनांक 13 अक्टूबर 2002 को पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित वृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन श्री विमलकुमारजी जैन नीरू केमिकल्स, दिल्ली ने किया। समारोह की अध्यक्षता श्री साहू रमेशचन्दजी जैन, दिल्ली ने की।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री पवनकुमारजी जैन अलीगढ़ तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सत्युताई दफ्तरी मुम्बई, श्री राजकुमारजी काला जयपुर, श्री निहालचन्दजी जैन जयपुर, श्री कमल शाह लंदन, श्री हेमल शाह लंदन, श्री सुमनभाई दोशी मुम्बई, श्री भागचन्दजी कालिका उदयपुर आदि उपस्थित थे। विद्वानों के रूप में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित कैलाशचन्दजी बुलन्दशहर, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. यशपालजी जैन बेलगाँव, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा भी मंचासीन थे।

इसके पूर्व श्री अजितप्रसादजी जैन, दिल्ली ने झण्डारोहण किया ।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्री चक्रेशकुमार अशोककुमार सुशीलकुमार जैन, कोलकाता तथा श्री शान्तिलालजी जैन, खिमलासा थे।

इस अवसर पर अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान महामहोपाध्याय डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में वर्तमान युग में आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा ने ट्रस्ट की गतिविधियों का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने किया।

नोट : विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

शाहगढ़ में धर्म प्रभावना

शाहगढ़ (सागर) : ब्र. यशपालजी के पावन सान्निध्य में 23 सितम्बर से 4 अक्टूबर 2002 तक अनेक मुमुक्षु भाई-बहिनों ने जिनवाणी-गंगा का रसास्वादन किया। प्रात: पूजन, गुणस्थान विवेचन पर दोनों समय प्रवचन एवं रात्रि में पाठशाला का कार्यक्रम आयोजित किया गया। ब्र. यशपालजी की पवित्र प्रेरणा से लगभग 100 साधर्मी भाई-बहिनों ने कण्ठ-पाठ करके जिनवाणी को अपने कण्ठ का हार बनाया। इसके अलावा 5 अक्टूबर को सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि की वंदना के साथ-साथ सिद्धायतन में ब्र. यशपालजी तथा पण्डित प्रमोदजी शास्त्री के प्रवचनों का लाभ मिला।

देश-विदेश में दशलक्षण महापर्व सम्पन्न

शिकागो (अमेरिका) : यहाँ समाज के विशेष आमंत्रण पर पण्डित अभयकुमारजी जैनदर्शनाचार्य, छिन्दवाड़ा पधारे। आपके प्रात: समयसार गाथा - 17, 18, 19 पर प्रवचन हुये । तत्पश्चात् पूजन-विधान का आयोजन किया गया। रात्रि में छहढाला पर मार्मिक प्रवचन किये गये ।

रविवार को युवा वर्ग के विशेष आग्रह पर **क्रिया, परिणाम और अभिप्राय** विषय पर आपकी विशेष कक्षा ली गई।

ज्ञातव्य है कि इससे पूर्व श्वेताम्बर पर्यूषण के अवसर पर शिकागो से 200 कि.मी. दूर मिलवाकी में भी आपके दोनों समय क्रिया-परिणाम और अभिप्राय पर विशेष प्रवचन हुए। पूजन-भक्ति कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया।

शिकागो से लगभग 150 कि.मी. दूर केनककी में 23 से 25 सितम्बर तक डॉ. विपिनभाई भायाणी एवं श्रीमती भारतीबेन भायाणी के घर पर लघु शिविर का आयोजन किया गया; जिसमें 25 भाई-बहिनों ने धर्मलाभ लिया। इस अवसर पर पूज्य गुरुदेवश्री के वचनामृत एवं मोक्षमार्ग प्रकाशक के सातवें अध्याय पर तीनों समय मार्मिक प्रवचन किये गये। प्रात: पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन भी होता था।

धर्म की महती प्रभावना से प्रभावित होकर सभी साधर्मी भाइयों ने प्रतिवर्ष यहाँ शिविर लगाने की माँग की।

नांदेड (महा.) : यहाँ ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा और पण्डित रवीशजी गांधी बाँसवाड़ा द्वारा महती धर्म-प्रभावना हुई। श्री 1008 आदिनाथ जिनमंदिर सराफा में पण्डित श्री धन्यकुमारजी बेलोकर के प्रात: छहढाला पर एवं श्री 1008 शान्तिनाथ दिग. जैनमंदिर में रत्नकरण्डश्रावकाचार पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में पण्डित रवीशजी द्वारा महावीर भवन में छहढाला की कक्षा चलाई गई।

राजपुर रोड दिल्ली : यहाँ समाज के विशेष आमंत्रण पर बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना से पधारे। प्रात: 7 से 11 बजे तक संगीत सरिता के साथ पूजन-विधान का आयोजन किया गया। दोपहर में आपके द्वारा समयसार कलश की कक्षा ली गई एवं रात्रि में दश धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुए। **- मंत्री, प्रमोद जैन**

(शेष पृष्ठ 4 पर .....)

सम्पादकीय –

हरिवंशपुराण : एक अनुशीलन

16

– रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे .....)

शौर्य और प्रभाव के द्वारा सागर पर्यन्त पृथ्वी को जीतने वाले और विशाल पृथ्वी पर शासन करने वाले बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं की सत्ता रही हो, वह भी काल के प्रचण्ड प्रहारों से ध्वस्त हुई दिखाई देती हैं। नेत्र और मन के समान प्रिय स्त्री तथा प्राणों के समान सुख-दु:ख के साथी मित्र और पुत्र भी दुर्भाग्य रूप प्रलय के प्रकोप से अशुभ कर्मों के उदय आने पर सूखे पत्तों की भांति नष्ट होते देखे जाते हैं। मनुष्यों की तो बात ही क्या, देव भी इस संसार में प्रिय देवांगनाओं के वियोग को प्राप्त होते देखे जाते हैं।

फिर भी बहुत से दीर्घ संसारी प्राणी स्वयं मृत्यु के भय से रहित हैं। यह बहुत बड़ा आश्चर्य है। लगता है इनकी शास्त्र रूपी दृष्टि मोहरूपी अंधकार से आच्छादित हो गई है। इसी कारण इस आत्मकल्याणकारी मार्ग को छोड़कर विषयरूप आमिष के गर्त में पड़ रहे हैं।

इसके बाद महाराज मुनिसुव्रत के राज सुख के साथ सुखद षट् ऋतुओं का सरस वर्णन करते हुए कवि ने अन्त में शरद ऋतु के मेघों की क्षणभंगुरता का निमित्त बताकर मुनिसुव्रत के अन्दर वैराग्य जागृत कराते हुए राजा मुनिसुव्रत की सोच को अभिव्यक्त करते हुए कहा है ह्न

''अरे ! यह शरदऋतु का मेघ इतने जल्दी कैसे कहाँ विलीन हो गया। जान पड़ता है कि विषय-कषायों में लिप्त वस्तु के लिए स्वभाव को भूल संसारी प्राणियों को विषयों की क्षणिकता का बोध कराने के लिए ही मानो ये मेघ घुमड़-घुमड़कर शीघ्र लुप्त हो गये हैं। अज्ञानियों को तो यह भी भान नहीं कि इन्हीं क्षणभंगुर मेघों की भाँति ही यह वज्र जैसा सुदृढ़ शरीर भी वृद्धावस्था रूपी आंधी-तूफानों के प्रहारों से नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। अपने शौर्य और प्रभाव द्वारा समस्त पृथ्वी तक को वश में करनेवाले बड़े-बड़े राजा-महाराजा भी कालचक्र के प्रचण्ड आघातों से चूर-चूर हो जाते हैं। प्राणों के समान प्रिय स्त्रियाँ, पुत्र, मित्र भी दुर्भाग्यरूप प्रबल वायु के वेग से सूखे पत्तों की भाँति नष्ट हो जाते हैं। मृत्यु को प्राप्त होकर यत्र-तत्र धूल में मिल जाते हैं।

जिसप्रकार ईंधन से अग्नि कभी तृप्त नहीं होती, हजारों नदियों के पानी से भी समुद्र कभी संतुष्ट नहीं होता, उसीप्रकार संसार के संचित काम-भोग की सामग्री से संसारी जीवों की भोगाभिलाषा कभी तृप्त नहीं होती।

इसके विपरीत जो ज्ञानी सम्यग्दृष्टि एवं इन्द्रियविजयी मानव उन विषयों से व्यावृत्त हो जाते हैं, वे तत्त्वज्ञान की जलधारा से उस विषयाग्नि को शीतल कर देते हैं। मैं भी इन सारहीन विषयसुखों को छोड़कर क्यों न शीघ्र ही हितरूप मोक्षमार्ग में प्रवृत्त हो जाऊँ ? अब मुझे इन्हें त्यागने में एक क्षण भी विलम्ब नहीं करना चाहिए।''

मैं सर्वप्रथम अपने उत्कृष्ट प्रयोजन को अनन्त चतुष्टय को सिद्ध करके पश्चात् पर के हित के लिए यथार्थ धर्म तीर्थ की प्रवृत्ति करूँगा।

इसप्रकार मतिह्न श्रुत और अवधिज्ञानरूप ज्ञान नेत्रों से युक्त स्वयम्भू भगवान जब स्वयं प्रतिबुद्ध हो गये तब सर्वार्थसिद्धि तक के समस्त इन्द्रों के आसन कम्पायमान हो गये। उसीसमय निश्चल मनोवृत्ति और श्वेत दीप्ति के धारक सारस्वत आदि लोकान्तिक देव औपचारिक रूप से उन्हें संबोधनार्थ एवं उनके वैराग्य की अनुमोदना करते आ गये तथा हाथ जोड़कर नमस्कार कर तीर्थंकर के जीव मुनिसुव्रत नाथ के वैराग्य की अनुमोदना के साथ स्तुति करने लगे।

हे जिनचन्द्र ! सम्यग्ज्ञानरूपी किरणों से मोहरूपी अंधकार के समूह को नष्ट करनेवाले हे नाथ ! आप जयवन्त हों। आपकी आत्मसाधना सफल हो, आप अपने निर्मल अनन्त गुणों से समृद्ध हों। आप भव्य जीवों रूपी कुमुदिनियों को खिलाने के लिए सूर्य समान हैं।

हे त्रिलोकीनाथ ! आप उस धर्मतीर्थ रूप अमृत वर्षा का प्रवर्तन करें, जिससे संसार के विषयाग्नि के दु:ख से संतप्त प्राणी स्नान कर समस्त मोहरूप मल को धोकर निर्मल हो सकें और शीघ्र संसार सागर से पार होकर सदा के लिए आनन्दस्वरूप मुक्ति को प्राप्त कर लें।

लोकान्तिक देव इसप्रकार स्तुति और अनुमोदना कर ही रहे थे कि उसी समय नाना विमानों के समूहों से आकाशमार्ग को आच्छादित करते हुए सौधर्म आदि चारों निकाय के देव वहाँ तपकल्याणक महोत्सव मनाने आ गये। उत्साह से भरे सभी देवों और इन्द्रों ने अपनी महोत्सव की सभी औपचारिकतायें पूरी कीं। विरागी राजा मुनिसुव्रत नाथ ने अपनी प्रभावती स्त्री के पुत्र सुव्रत को राज्यपद पर अभिषिक्त करके मुनिसुव्रतनाथ पालकी पर विराजमान होकर वन में चले गये। वहाँ कार्तिक शुक्ल सप्तमी के दिन एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली। सर्वप्रथम केशलोंच किया, इन्द्र ने उन केशों को पिटारे में रखकर विधिपूर्वक क्षीरसमुद्र में क्षेप दिया।

तदनन्तर मुनिराज मुनिसुव्रतनाथ आगामी दिन जब आहार की विधि प्रगट करने के लिए कुशाग्रपुरी में आहार लेने के लिए निकले तो वृषभदत्त ने उन्हें विधिपूर्वक खीर का आहार दिया।

आश्चर्य की बात यह थी कि मुनिसुव्रतनाथ को आहार हेतु बनाई गयी खीर हजारों मुनियों एवं अन्य लोगों ने खाई; फिर भी वह खीर समाप्त नहीं हुई। देव दुन्दुभि बजने लगी, धन्य-धन्य के शब्दों ने समस्त आकाश को व्याप्त कर दिया, सुगन्धित वायु बहने लगी। पुष्पों की वर्षा होने लगी, आकाश से रत्न बरसने लगे। इन पंचाश्चर्यों को देवों ने चिरकाल तक देखा। देवों ने आहारदान देनेवाले वृषभदत्त का सम्मान किया और देवलोक को चले गये।तत्पश्चात् तेरह हजार वर्ष का छद्मस्थ काल बिताकर मुनिसुव्रतनाथ मुनि ने ध्यानाग्नि द्वारा घातिया कर्मों को दग्ध करके मगसिर मास की शुक्ल पंचमी को केवलज्ञान प्राप्त किया। उस समय समस्त अहमिन्द्रों ने अपने-अपने आसनों से सात-सात डग (कदम) आगे चलकर तथा हाथ जोड़कर जिनेन्द्र को परोक्ष नमन किया। और केवलज्ञान कल्याणक मनाने हेतु वहाँ उपस्थित हुए। सभी ने मिलकर तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के केवलज्ञान की भक्तिभाव से पूजा की और अपने-अपने स्थान चले गये।

समवशरण में विराजमान तीर्थंकर परमात्मा से समक्ष विशाख नामक गणधर देव के मन में तीर्थंकर देव की दिव्यध्वनि द्वारा जगत को द्वादशांग का सार समझाने/बताने का विकल्प उठा। उनके उस विकल्प का निमित्त पाकर तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ की दिव्ध्वनि द्वारा द्वादशांग के साररूप अमृत झरने लगा, जिसे सभी श्रोताओं ने अंजुलि भर-भर कर खूब पिया। **(क्रमश:)**

कहान सन्देश

मोक्षमार्ग का प्रथम सोपान

(सम्यग्दर्शन पुस्तक के आधार से)

(109 वीं किस्त)

(गतांक से आगे .....)

प्रभु! तेरे द्रव्य के बड़प्पन की तो क्या बात करें। किन्तु अनंत सिद्धों को तूने अपनी पर्याय में स्थापित किया, इसलिये अब तुझे राग का आदर तो रहेगा नहीं, अब तू अल्पज्ञरूप में भी नहीं रह सकेगा, अब तो तू सर्वज्ञ स्वभाव में ही जायगा और सर्वज्ञ होगा – ऐसा तू निस्संदेह जान। हम जो यह बात कह रहेहैं उसमें तू भव्य-अभव्य का तो प्रश्न ही नहीं रखना; किन्तु सिद्ध होने में अनंतकाल लगेगा यह भी नहीं मानना; जैसे सम्यग्दर्शन के पश्चात् सिद्ध होने में असंख्य समय की आवश्यकता होती है, अनन्त समय की नहीं; वैसे ही यहाँ तुझमें सिद्धों को स्थापित करते हैं, तब प्रभु! विश्वास रखना। प्रभु! अन्तर में विश्वास करना कि हम आत्मा की ऐसी बात सुनने योग्य हुए और प्रभु ने हमारी योग्यता देखकर हममें अनन्त सिद्धों की स्थापना की है। प्रभु ने श्रोताओं को सामूहिक निमंत्रण दिया है कि तुम सब श्रोताजन सिद्ध होने योग्य हो! इसलिये तुममें हम सिद्धत्व की स्थापना करके यह बात प्रारंभ करते हैं अर्थात् तुम्हें भी तब तक सुनने की तैयारी रखना पड़ेगी।

पंचम काल के मुनि पंचमकाल के अप्रतिबुद्ध श्रोताओं को सम्बोधते हैं कि नित्यनिगोद के जीव में भी अंतर में स्वभावरूप परिणमित होने की शक्ति है, भले ही निगोद दशा में परिणमित नहीं हो सके किन्तु निगोद को अनादि-सांत करके, मनुष्य होकर, पंचम पारिणामिकभाव का अनुभव करके सिद्ध का सादि-अनंत भाव प्रगट कर सकता है, तो हे जिज्ञासु! तू तो निगोद से बाहर निकल चुका है, मनुष्यपना प्राप्त करके पंचमगतिरूप परिणमित होने योग्य ही है इसलिये सन्देह मत कर, निस्सन्देह हो। हम तुझसे कहते हैं कि तू स्वभावरूप परिणमित होने योग्य है, तो फिर तू निःशंक क्यों नहीं होता? हम तो भगवान का अनुसरण करके तुझसे यह कह रहे हैं कि तू निःशंक हो, विश्वास कर, पंचमकाल या अल्प पुण्य या कमी को लक्ष्य में न ले, तू पूर्ण परमात्मतत्त्व है और तद्रूप परिणमन के योग्य है। जैसे अभव्य परिणमित होने योग्य नहीं है वैसे ही नित्यनिगोद के जीव परिणमित नहीं हो सकते ऐसा नहीं है। फिर जब तू जिज्ञासापूर्वक सुनने आया है इसलिये तू परिणमन कर सके – ऐसा निःशंक हो, भले कोई रागादि हों किन्तु वे तुझे बाधक नहीं हैं, वे तो ज्ञान के ज्ञेयरूप विषय हैं। इसलिये हीनता और न्यूनता का आश्रय छोड़ और मैं स्वभावरूप परिणमित होने योग्य ही हूँ – इस प्रकार निःशंक हो !

धर्मधुरंधर योगीन्द्रदेव पुकारते हैं कि – अरे आत्मा! तू परमात्मा समान है तथापि तू जिनदेव में और अपने में क्यों अंतर करता है? अंतर करेगा तो फिर वह अंतर कब छूटेगा? इसलिये कहते हैं कि मैं तो राग सहित अल्पज्ञता युक्त हूँ ऐसा मनन मत करो, किन्तु जो जिनेन्द्र हैं सो ही हम हैं ऐसा चिन्तन करो! अरेरे! मैं अल्पज्ञ हूँ, मुझमें क्या ऐसी शक्ति हो सकती है? – यह बात रहने दो भाई ! मैं पूर्ण परमात्मा होने योग्य हूँ – ऐसा नहीं; किन्तु वर्तमान में पूर्ण परमात्मा हूँ – ऐसा मनन करो !

अहा !प्रभु तो महाविदेह में समवसरण में विराजते हैं। सौ-सौ इन्द्र, चक्रवर्ती आदि तथा जंगल के सैकड़ों केसरी सिंह और बाघों के झुण्ड भगवान की वाणी सुनने आते हैं। अहा! परमात्मा की वह वाणी कैसी होगी? सर्वज्ञ परमात्मा कहते हैं कि – इस जगत में जिसे परमात्मा कहते हैं, वह कौन हैं? – कि तू स्वयं ही परमात्मा है। पर्याय में जो प्रगट परमात्मा हुए वह पद आया कहाँ से ? स्वयं शक्ति-अपेक्षा से परमात्मस्वरूप है, उसमें से वह परमात्मपर्याय प्रगट हुई है। अहा ! जीव ने स्वयं को शक्तिहीन स्वीकार किया हैऔर- दयादि का पालन करनेवाला मैं हूँ ऐसा मानता है; किन्तु प्रभु! क्या तू राग की क्रिया करने वाला है? ज्ञायक को राग का कर्तृत्व सौंपना वह तो अज्ञान और मिथ्याभ्रम है। 'सर्वोत्कृष्ट जो परमात्मा कहा जाता है वह तो तू स्वयं है' – ऐसी जिनेश्वरदेव की पुकार दिव्यध्वनि द्वारा गणधरों एवं इन्द्रों के समक्ष आयी है।

तू पामर है या प्रभु है? तुझे क्या स्वीकारना है? पामरता की स्वीकृति से पामरता कभी जायगी नहीं! प्रभुता का स्वीकार करने से पामरता कभी खड़ी नहीं रह सकती। मैं स्वयं-द्रव्यपने से परमेश्वर स्वरूप ही हूँ, इस प्रकार जहाँ परमेश्वर स्वरूप भगवान आत्मा ही हूँ का विश्वास आया वहाँ तू वीतराग हुए बिना नहीं रहेगा।

आत्मा की पूर्ण वीतरागदशा को प्राप्त हुए जो परमात्मा हैं वह मैं ही हूँ; क्योंकि मैं स्वयं ही परमात्मा होने योग्य हूँ। आचार्य योगीन्द्रदेव कहते हैं कि – यदि तेरा मुक्ति का प्रयोजन हो तो पहले ऐसा निर्णय कर!... निश्चय कर कि ह्न'मैं ही परमात्मा हूँ।'

अहो! मैं ही तीर्थंकर हूँ, मैं ही जिनवर हूँ, मुझमें ही जिनेश्वर होने के बीज पड़े हैं। परमात्मा का इतना उल्लास.... कि मानों परमात्मा से मिलने जा रहा हो। परमात्मा बुलाते हों कि – आओ!....आओ!....चैतन्यधाम में आओ! अहाहा! चैतन्य का इतना आह्लाद और प्रह्लाद होता है किह्नचैतन्य में अकेला आह्लाद ही भरा हो! उसकी महिमा, माहात्म्य, उल्लास, उमंग असंख्य प्रदेशों से आना चाहिये।

अरे जीव ! दूसरा सब भूल जा और अपनी निजशक्ति को सँभाल! पर्याय में संसार है, विकार है वह भूल जा और निजशक्ति के सन्मुख देख तो उसमें संसार है ही नहीं। चैतन्यशक्ति में संसार था ही नहीं, है भी नहीं और होगा भी नहीं। लो, यह मोक्ष! ऐसे स्वभाव की दृष्टि करे तो आत्मा मुक्त ही है। इसलिये एक बार अन्य सब लक्ष में से छोड़ दे और ऐसे चिदानन्द स्वभाव में लक्ष को एकाग्र कर तो तुझे मोक्ष की शंका नहीं रहेगी, अल्पकाल में अवश्य मुक्ति प्राप्त करेगा।

ध्रुव के ध्येय की धुन सो धर्म। निहाल भाई को ध्रुव का ही रटन था; उन्होंने मुख्यतः पर्याय की एकदम गौणता करके सब बात कही है। बात झूठी नहीं , सच्ची है। 'ववहारोऽभूदत्थो' जो समयसार में कहा है वही बात है। पर्यायमात्र को उन्होंने अभूतार्थ में ले लिया है; क्योंकि ध्रुव में पर्याय नहीं है ना ! इसलिये भिन्न है .... भिन्न है – ऐसा कहा है। खास तो गौणता करायी है।

मैं सिद्ध समान ही हूँ, तथा अरिहंत समान ही हूँ – ऐसे विश्वास में शुद्ध अस्तित्व का जोर है। जैसे अरिहंत-सिद्ध हैं वैसा ही मैं हूँ इस प्रकार दो की समानता में शुद्ध-अस्तित्व के विश्वास का बल है।

मैं सिद्ध समान ही हूँ तथा अरिहंत समान ही हूँ – ऐसे विश्वास में शुद्ध अस्तित्व का जोर है। जैसे अरिहंत-सिद्ध हैं वैसा ही मैं हूँ इसप्रकार दो की समानता में शुद्ध-अस्तित्व के विश्वास का बल है। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 4 का शेष ...)

लूणदा (राज.) : यहाँ प्रात: पण्डित सुनीलकुमारजी शास्त्री नाके द्वारा प्रात: समयसार पर सारगर्भित प्रवचन हुए। दोपहर में पण्डित प्रमोदकुमारजी शास्त्री, टामटिया ने पुरुषार्थसिद्धयुपाय की कक्षा और रात्रि में दश धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुये। पण्डित प्रितेशजी द्वारा सायं जिनेन्द्र भक्ति एवं बालकक्षा का आयोजन किया गया। पण्डित सुनीलजी द्वारा इस अवसर पर विशेष प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के विशेष आमंत्रण पर पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावावाले पधारे। आपके तीनों समय मार्मिक प्रवचन हुए। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

गनोडा(बाँसवाड़ा) : यहाँ पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में धर्म के दश लक्षण पर अभूतपूर्व प्रवचन हुए। प्रात: दशलक्षण मण्डल विधान का आयोजन किया गया एवं रात्रि में रंगारंग कार्यक्रमों की झलकियाँ प्रस्तुत की गईं।

जयपुर (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन मंदिर खजांची की नसियां में पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ द्वारा रात्रि में दश धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रतिदिन प्रवचन पर आधारित प्रश्नमंच के अतिरिक्त विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

पण्डित राजेशजी द्वारा ही प्रात: जनता कॉलोनी में ब्र. विमलाबेन के प्रवचनों पर आधारित प्रश्नमंच किया गया।

वाशिम (महा.) : यहाँ पण्डित संजयकुमारजी सेठी, जयपुर के प्रात: समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में गुणस्थान प्रवेशिका की कक्षा ली गई तथा रात्रि में दश धर्म पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

मुंगला (महा.) : यहाँ पण्डित सुभाषजी रोकडे के तीनों समय छहढाला, दशधर्म व श्रावकाचार पर सरल-सुबोध शैली में प्रवचन हुए। पण्डितजी की प्रेरणा से अजैन लोगों ने भी मद्य, मांस, मधु एवं रात्रि-भोजन का त्याग किया। **- देवचन्द मिरकुटे**

वर्धा (महा.) : यहाँ पण्डित श्रुतेशजी सातपुते डोणगाँव के प्रात: विभिन्न विषयों पर तथा सायंकाल दश धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुए। स्थानीय मण्डलों द्वारा अनेक ज्ञानवर्द्धक स्पर्धा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। **- पद्माकर क्षीरसागर**

गंजबासौदा (म.प्र.) : यहाँ पर अमितजी शास्त्री जबेरा के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दश धर्मों पर मांगलिक प्रवचन हुए। रात्रि में बच्चो के द्वारा धार्मिक सांस्कृति कार्यक्रमों का सुन्दर आयोजन किया गया। यहाँ आदिनाथ दिग. जैन मंदिर गाँधी चौक में भी दोपहर और रात्रि में आपके मार्मिक प्रवचन हुए।

सावदा (महा.) : यहाँ पण्डित विवेकजी सातपुते शास्त्री डोणगाँव के दश धर्म व विभिन्न विषयों पर प्रात: एवं रात्रि में सारगर्भित प्रवचन हुए। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पण्डितजी की प्रेरणा से पाठशाला की स्थापना की गई। **- गजानन साखरे**

अहमदाबाद (न्यू मिलन) : यहाँ पण्डित सुमतजी शास्त्री, बरा के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं रात्रि में दश धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में प्रौढ़कक्षा एवं सायंकाल बालकक्षा भी ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

टोंक (राज.) : यहाँ पण्डित विजयकुमारजी शास्त्री चाकसू के तीनों समय क्रमश: तत्त्वार्थसूत्र, रत्नकरण्डश्रावकाचार एवं दश धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुए। रात्रि में विविध धार्मिक कार्यक्रम हुए।

हजारीबाग (झारखण्ड) : यहाँ पण्डित नितिनकुमारजी शास्त्री के प्रात: बारह भावना, दोपहर में छहढाला और रात्रि में दश धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुए। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

अमरकोट (म.प्र.) : यहाँ पण्डित रविकुमारजी शास्त्री, पिड़ावा के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक के आधार से एवं रात्रि में दश धर्म के माध्यम से प्रवचन हुए। सायंकाल बच्चों की कक्षा भी ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गए।

रन्नौद (शिवपुरी) : यहाँ पण्डित कस्तूरचन्दजी शास्त्री के प्रात: रत्नकरण्डश्रावकाचार, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दस धर्म पर प्रभावी प्रवचन हुए। आपकी प्रेरणा से पाठशाला का पुनर्गठन किया गया।

रिसोड़ (महा.) : यहाँ पण्डित प्रशांतकुमारजी शास्त्री द्वारा मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं धर्म के दश लक्षण विषय पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षा भी ली गई।

पाटन (राज.) : यहाँ पण्डित हितेश पाटनी एवं विक्रान्त पाटनी द्वारा प्रवचन और कक्षाओं का सुन्दर आयोजन किया गया। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गए।

झालावाड़ (राज.) : यहाँ पण्डित बाबूलालजी 'सौजन्य' एवं पण्डित जितेन्द्रजी खड़ैरी के तीनों समय प्रवचन हुए। इस अवसर पर श्री सिद्ध चक्र मण्डल विधान का आयोजन भी किया गया।

झिलाई (राज.) : यहाँ पण्डित चेतनकुमारजी शास्त्री, खड़ैरी के तीनों समय प्रवचन हुए। आपके द्वारा बालकक्षा ली गई तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये।

जैतपुर (गुजरात) : यहाँ पण्डित वरुण शास्त्री, मुम्बई के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक पर एवं रात्रि में दश धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के बाद आपके द्वारा छहढाला की प्रौढ़कक्षा ली गई।

मेड़तासिटी (राज.) : यहाँ पण्डित विजयजी यादव द्वारा दोनों समय दश धर्मों एवं तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन किये गये। प्रतिदिन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया गया।

भेलूपुर (वाराणसी) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ दिग. जैन तीर्थ क्षेत्र पर पण्डित प्रकाशचन्दजी जैन 'ज्योतिषाचार्य' मैनपुरी के प्रात: एवं रात्रि में अष्टपाहुड़ पर प्रवचन हुए। साथ ही दिग. जैन पंचायती मंदिर में रात्रि के समय दश धर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुए।

वनस्थली (राज.) : यहाँ पण्डित संदीपजी डडूका के दश धर्मों और छहढाला पर प्रवचन हुए। आपके द्वारा बच्चों की कक्षा भी ली गई।

बनखेड़ी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित प्रक्षालजी शास्त्री के प्रात: दश

धर्म, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर सरल-सुबोध शैली में प्रवचन हुए। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गए ।

कानपुर (कराचीखाना) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में पण्डित अभिषेकजी रहली के तीनों समय सारगर्भित प्रवचन हुए। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रही।

गोरमी (भिण्ड) : यहाँ पण्डित बाबूलालजी, अशोकनगर तथा पण्डित सौरभजी शास्त्री, शाहगढ़ से पधारे। आप दोनों विद्वानों के प्रात: और सायं हुए प्रवचनों से धर्म की महती प्रभावना हुई।

मेरठ (शास्त्रीनगर) : यहाँ डी-ब्लॉक स्थित जैनमंदिर में एवं सेक्टर -2 स्थित मंदिर में भरतजी अलगोंडर, बाहुबली एवं अंचलप्रकाशजी जैन, ललितपुर के प्रात: एवं सायंकाल सारगर्भित प्रवचन हए।

झालीजी का वराना (राज.) : यहाँ पण्डित निखिलकुमारजी शास्त्री, बण्ड़ा द्वारा प्रात: और रात्रि में प्रवचन किये गये। प्रवचन के पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

सिवनी (म.प्र.) : यहाँ पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री सिंगोड़ी द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दश धर्म पर प्रवचन किये गये। दोपहर में जिनधर्म प्रवेशिका एवं 'सुख यहाँ' विषय पर तथा सायंकाल ज्ञानदीपिका एवं छहढाला पर कक्षा ली गई। आपने रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये ।

मालथौन (म.प्र.) : यहाँ पण्डित आशीषजी जबेरा के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र एवं समाधिमरण पर तथा रात्रि में दश धर्म पर प्रवचन हुए। दोपहर में भक्तामर स्तोत्र की कक्षा ली गई। रात्रि में अनेक कार्यक्रम कराये गये।

कुरावड़ (उदयपुर) : यहाँ पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना के प्रात: पूजन के पश्चात् रत्नकरण्डश्रावकाचार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र व मोक्षमार्गप्रकाशक तथा रात्रि में दश धर्म पर प्रवचन हुए।

बीड़ (खण्डवा) : यहाँ पण्डित जिनेशजी जैन ने दोपहर में छहढाला की कक्षा ली तथा रात्रि में दश धर्म पर प्रवचन किये। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये। इस अवसर पर दशलक्षण विधान का आयोजन भी किया गया।

एर्नाकुलम (केरल) : यहाँ पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, बड़ामलहरा के दोनों समय सारगर्भित प्रवचन हुए। रात्रि में आपके द्वारा विविध धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

अकलूज (महा.) : यहाँ पण्डित जितेन्द्रजी राठी शास्त्री द्वारा प्रात: नियमसार एवं रात्रि में दश धर्म पर प्रवचन हुए। दिन में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। अन्तिम दिन एकीभाव मण्डल विधान का आयोजन किया गया। **- रमेश दोशी**

कुचड़ौद (म.प्र.) : यहाँ पण्डित आशीषकुमारजी शास्त्री, बिनौता के तीनों समय रत्नकरण्डश्रावकाचार तथा दश धर्म पर प्रवचन हुए। सायंकाल बालकक्षा ली गई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

फैडरेशन की महिला शाखा की स्थापना

मालेगाँव (महा.) : पर्वराज पर्यूषण के पूर्व पण्डित संतोषजी सावजी शास्त्री, अम्बड़ की प्रेरणा से अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की महिला शाखा की स्थापना की गई। कार्यकारिणी में अध्यक्ष मंत्री सहित कुल 51 सदस्य हैं। शाखा की स्थापना के साथ ही सभी सदस्यों ने प्रतिदिन देवदर्शन, देवपूजा एवं स्वाध्याय का नियम लिया है।

जैनपथ प्रदर्शक प्रतियोगिता - 3

प्रश्न 1. विदेह क्षेत्र में कितने तीर्थंकर विद्यमान हैं ?
प्रश्न 2. णमोकार मंत्र से कितने मंत्रों की उत्पत्ति हुई है ?
प्रश्न 3. अस्तिकाय कितने होते हैं ?
प्रश्न 4. वर्तमान चौबीसी के कितने तीर्थंकरों पर उपसर्ग हुआ ?
प्रश्न 5. कितने तीर्थंकर खड़गासन से मोक्ष गये हैं ?
प्रश्न 6. इक्ष्वाकुवंश में कितने तीर्थंकरों का जन्म हुआ ?
प्रश्न 7. परिषह कितने होते हैं ?
प्रश्न 8. सन् 2001 में महावीर निर्वाण महोत्सव कौन-से वार को था ?
प्रश्न 9. नामकर्म की प्रकृतियाँ कितनी होती हैं ?
प्रश्न 10. पं. टोडरमलजी का जन्म किस विक्रम सं. को हुआ था ?

निर्देश : कृपया उक्त सभी प्रश्नों के उत्तर सादे कागज पर या पोस्टकार्ड पर लिखकर भेजें। उत्तर भेजने की अन्तिम तिथि 10 नवम्बर 2002 है।

प्रविष्टियाँ भेजने का पता: श्री राजमलजी जैन, 9 चैतन्य सदन, तिलक कॉलोनी, हिरणमगरी सेक्टर-3, उदयपुर (राज.)।

101/-रुपये का प्रथम पुरस्कार तथा 51-51 रुपये के दो द्वितीय पुरस्कार हैं। सही जवाब भेजनेवाले उत्तरदाताओं का चयन ड्रॉ पद्धति से निकाला जायेगा। **- प्रस्तुति : सीमा जैन, उदयपुर**

विद्वत्परिषद द्वारा मंगलतीर्थ यात्रा का द्वितीय चरण

नई दिल्ली : प्रात: स्मरणीय गणेशप्रसादजी वर्णी द्वारा स्थापित श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद इस वर्ष 22 से 30 दिसम्बर तक बुन्देलखण्ड की मंगल तीर्थयात्रा का सफल आयोजन करने जा रहा है। स्मरण रहे कि दिसम्बर 2000 में आयोजित दक्षिण भारत की मंगल तीर्थयात्रा आज भी विद्वत्वर्ग के मानसपटल पर अंकित है। अब यह बुन्देलखण्ड की यात्रा इसके द्वितीय चरण के रूप में अविस्मरणीय रहेगी। कार्यक्रम को अन्तिमरूप दिया जा रहा है। विद्वत्परिषद के जो भी सदस्य महानुभाव इस यात्रा का लाभ लेना चाहें वे तत्काल सम्पर्क करें।

- अखिल बंसल
स्टेशन रोड, दुर्गापुरा, जयपुर । फोन-722274

फैडरेशन शाखा का पुर्नगठन

रुड़की (उत्तरांचल) : यहाँ 20 सितम्बर को राजस्थान प्रान्त प्रदेश प्रतिनिधि जिनेन्द्रकुमार जैन के निर्देशन में अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का पुनर्गठन किया गया। इस अवसर पर पाठशाला का उद्घाटन भी विधायक सुरेशचन्दजी के करकमलों द्वारा किया गया और अध्यापिका के रूप में श्रीमती मंजू जैन का नियुक्त किया गया।

नवीन कार्यकारिणी में अध्यक्ष संजयकुमार जैन, उपाध्यक्ष सुनीलकुमार जैन, मंत्री अमितकुमार जैन, उपमंत्री नवनीतकुमार जैन, कोषाध्यक्ष प्रदीपकुमार जैन, प्रचार मंत्री विक्रांतकुमार जैन, उपप्रचार मंत्री मुकेशकुमार जैन, संयोजक वीतराग-विज्ञान पाठशाला, सुनीलकुमार जैन को सम्मिलित किया गया।

तत्त्वचर्चा

समयसार का सार 55

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

ingok iopu

समयसार परमागम में संवराधिकार का प्रकरण चल रहा है, अभी तक यह कहा गया है कि जितने भी जीव आजतक सिद्ध हुए हैं, वे सब भेद–विज्ञान के बल से ही सिद्ध हुए हैं एवं जितने भी जीव संसार में रखड़ रहे हैं, वे सभी भेद–विज्ञान के अभाव से ही रखड़ रहे हैं।

मूल बात यह है कि हमें भेद–विज्ञान किससे करना है ? कई स्तरों से इसका विश्लेषण हुआ है।

प्रथम – स्त्री–पुरुष, मकान–जायदाद इत्यादि जितने प्रगट बाह्य परपदार्थ हैं, जो हमारे पुण्य–पाप के उदय से संयोगरूप में हमें प्राप्त होते हैं। 'ये मैं नहीं हूँ, ये मेरे नहीं हैं, मैं इनका कर्त्ता–भोक्ता नहीं हूँ' – इसप्रकार सबसे पहले इनसे भेद–विज्ञान कराया।

दूसरा – जिस देहरूपी देवल में यह भगवान आत्मा रहता है, यह आत्मा उस देह से भी भिन्न है। यद्यपि यह देह में रहता है, पर यह देह नहीं है।

तीसरे – राग–द्वेष–मोह के विकारी परिणाम; यद्यपि इस भगवान आत्मा में ही उत्पन्न होते हैं, उनका इस आत्मा के साथ क्षणिक–तादात्म्य संबंध भी है; फिर भी वे पर के लक्ष्य से उत्पन्न होते हैं; अतः पर ही हैं। इसप्रकार तीसरे स्तर पर मोह–राग–द्वेष भावों से भेद–विज्ञान कराया है।

जो जिसके लक्ष्य से हो अध्यात्म में उसे उसका ही कहते हैं। अध्यात्म में ही क्यों ? लोकव्यवहार में भी ऐसा ही कहा जाता है।

जब हम दर्जी के यहाँ जाते हैं; तब हम उससे पूछते हैं कि हमारा काम हुआ या नहीं ?

अरे भाई ! कुर्ते को सिलना दर्जी का काम है या हमारा?

कुर्ता सिलना दर्जी का काम है, तब भी हम कहते हैं कि हमारा काम हो गया क्या ?

जिसके लिए काम किया जाता है, वह काम उसका काम कह दिया जाता है; जबकि काम तो करनेवाले का होता है।

ऐसे ही अध्यात्म में भी जिसके लक्ष्य से भाव उत्पन्न हो, उस भाव को उसका ही कह दिया जाता है।

कन्या की उत्पत्ति हमारे घर में होती है; लेकिन क्या वह हमारी मानी जाती है ? जिसे वह वरे; ऐसे वर की ही वह मानी जाती है।

जिसके यहाँ वह जन्मी है, वह उसकी नहीं; उसने जिसका वरण किया, वह उसकी ही हो जाती है। लोक में, जिस पर उसका लक्ष्य हो, जिस पर वह रीझी; उसे उसका ही कह दिया जाता है।

ऐसे ही अंतर में उत्पन्न होनेवाला मोह–राग–द्वेष का परिणाम; जिसपर रीझने से हुआ है, वह उसका है; इस न्याय से ये मोह–राग–द्वेष के परिणाम आत्मा में उत्पन्न होकर भी पर हैं।

पूर्व प्रकरण में –

देहदेवल में रहे पर देह से जो भिन्न है।
है राग जिसमें किन्तु जो उस राग से भी अन्य है।।

इसकी चर्चा की थी। अब –

गुणभेद से भी भिन्न है पर्याय से भी पार है।
जो साधकों की साधना का एक ही आधार है।।

अब भेद–विज्ञान का विश्लेषण इस छन्द के आधार पर होगा।

अभी तक यह कहा था कि भगवान आत्मा विकारी पर्याय से भी भिन्न है, अब आगे कहते हैं कि उत्पाद–व्यय से भी निरपेक्ष है, निर्मल पर्याय से भी पार है। पर के लक्ष्य से उत्पन्न हुए विकारी भाव से तो भिन्न है ही; लेकिन स्व के लक्ष्य से उत्पन्न हुई निर्मल पर्यायरूप सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र से भी यह भगवान आत्मा पार है। पूर्व में 'भिन्न' इस शब्द का प्रयोग किया था, अब यहाँ 'पार' शब्द का प्रयोग कर रहे हैं। इसमें थोड़ा अंतर है, हमें वास्तविक भगवान आत्मा के दर्शन करने हैं; यदि इस पर्याय पर भी जीव की दृष्टि अटक जाएगी तो भगवान आत्मा के दर्शन नहीं होंगे। भगवान आत्मा इस पर्याय से भी पार है।

इसका अर्थ 'पर्याय नहीं है' – ऐसा नहीं है; परंतु पर्याय होते हुए भी पर्याय पर दृष्टि नहीं रखना चाहिए – यह आशय है। अन्दर में उस पर्याय के पार जो द्रव्य है, उस पर दृष्टि रखना; तभी इस भगवान आत्मा के दर्शन होंगे।

यद्यपि हम पर्याय को वस्तु में से नहीं हटा सकते हैं; लेकिन फिर भी दृष्टि में से तो हटा ही सकते हैं। इसे हम इस उदाहरण से समझ सकते हैं।

पुत्र की शादी करनी है। पिता अपने पुत्र के लिए बहू खोजता है। पिता और पुत्र दोनों लड़की देखने गए। लड़कीवालों ने लड़की दिखाई; वह लड़की सज–धजकर, अच्छी तरह से कपड़े पहनकर आयी। बोलो ! इन कपड़ों में वह लड़की दिखेगी या कपड़े दिखेंगे ? यदि पिता कहे कि भाईसाहब ! हम लड़की देखने आए हैं; कपड़े देखने नहीं आए हैं। तब लड़कीवाले कहते हैं कि हम कब कह रहे हैं कपड़ों को देखो; लड़की को मत देखो। लड़की ही तो देख रहे हैं आप !

तब पिता कहे कि – क्या करें ! लड़की तो कपड़ों के पार है, कपड़ो के भीतर लिपटी हुई है; इसलिए लड़की तो हमें दिखाई देती ही नहीं है, कपड़े ही कपड़े दिखाई देते हैं।

तब लड़कीवाले कहेंगे – भाईसाहब ! क्या आप जिंदगी में पहली बार लड़की देख रहे हैं ? जितनी भी लड़कियाँ देखी जाती हैं, वे सब कपड़ों में ही देखी जाती हैं; क्योंकि हमेशा जो भी लड़की देखता है, तब उसे यह प्रश्न कभी उपस्थित नहीं होता है कि ये गोरी है या काली है ? थोड़े से हाथ का भाग

एवं चेहरा देखते ही वह यह निर्णय कर लेता है कि यह गोरी है या काली; क्योंकि जो अंग हमेशा खुला रहता है, उसकी अपेक्षा ढके हुए अंग अधिक सुंदर होते हैं, अधिक साफ होते हैं; – यह वह अच्छी तरह जानता है। उन अंगों को खोलने की आवश्यकता नहीं है।

आजतक किसी व्यक्ति को ऐसा प्रश्न उपस्थित नहीं हुआ कि कपड़ों में लिपटी हुई लड़की को कपड़ों से भिन्न कैसे देखें ? सभी ने उसे कपड़ों से भिन्न ही देखा है ! जिन्होंने उसे कपड़ों से भिन्न देखा, उन्हें वधू प्राप्त हुई और जिन्होंने उसमें मीन–मेख निकाली कि मैं कपड़ों में नहीं देखूँगा, कपड़े अलग करो तो मैं देखूँगा तो उन्हें लड़की देखने को भी नहीं मिली; फिर लड़की मिलने का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता।

ऐसे ही पर्याय को पृथक् करो, मैं तो त्रिकाली ध्रुव को देखूँगा। अरे भाई ! पर्याय तो कभी तीन काल में भी पृथक् होनेवाली नहीं है। पर्याय के रहते हुए पर्याय से रहित द्रव्य देखा जा सकता है। आजतक अनंत ज्ञानियों ने पर्याय के साथ में पर्याय से रहित द्रव्य देखा है। आत्मा की प्राप्ति का यही उपाय है। यही 'पर्याय से पार' का आशय है।

वस्त्रों में लिपटी हुई लड़की के वस्त्र नहीं देखे जाते हैं; अपितु लड़की ही देखी जाती है। ऐसे ही पर्याय में लिपटे हुए आत्मा में पर्याय न देखे, केवल आत्मा को देखे – ऐसा कमाल दृष्टि में होता है। ऐसा कमाल लोक में नहीं होता, वस्तु में नहीं होता, इस जीव की दृष्टि में ऐसा कमाल होता है।

नाट्यशास्त्र का एक नियम है कि नाटक में कुछ वस्तुएँ तो मंच पर दिखाई जाती हैं और कुछ लोगों की कल्पना के लिए छोड़ दी जाती हैं।

भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में लिखा है कि हाथी–घोड़े मंच पर कैसे दिखाए जाएँगे ? यद्यपि युद्ध तो हाथी–घोड़ों और रथों के माध्यम से होता है, तथापि वे परदे पर कैसे दिखाये जा सकते हैं ?

तब दो पात्र परस्पर वार्तालाप करते हुए उस युद्ध का वर्णन करते हैं एवं वह युद्ध कितना भयंकर हुआ था, इसका आभास कराते हैं। इससे सभी दर्शक यह मान लेते हैं कि भयंकर युद्ध हुआ था और उसके माध्यम से वास्तविक युद्ध की कल्पना भी कर लेते हैं।

फिल्मों में शादी का एक फेरा दिखाते हैं, उसके पश्चात् विदाई का दृश्य दिखा देते हैं, तब सभी दर्शक यह समझ लेते हैं कि सात फेरे हो गए हैं एवं बारात जा रही है। आवश्यक नहीं है कि सात फेरे दिखाएँ जाएँ। विदाई के दृश्य के पश्चात् ससुराल का दृश्य दिखा देते हैं; तब सभी समझ लेते हैं कि शादी होकर अब वह लड़की ससुराल में आ गई है। कार में बैठते दिखाएँगे और एक सैकेण्ड में उतार देंगे; तब सभी समझ जाते हैं कि रास्ते में कार 1000 मील चली है। इसप्रकार समय–समय पर सभी आवश्यक कल्पना कर लेते हैं।

आत्मा के दर्शन करने के लिए ऐसी ही भेदक दृष्टि चाहिए। नाटक देखते समय जैसी भेदक दृष्टि होती है; आत्मा के दर्शन करते समय वैसी ही भेदकदृष्टि चाहिए। आत्मा को देह से पृथक् नहीं किया जा सकता है। जब सम्यग्दर्शन होता है, तब यह आत्मा देह देवल में ही रहता है। सम्यग्दृष्टि देह में रहते हुए आत्मा को देह से भिन्न देखते हैं।

जैसे देह में रहते हुए आत्मा को देह से भी भिन्न देखा जाता है; वैसे ही पर्याय में रहते हुए भगवान आत्मा को पर्याय से पार भी देखा जा सकता है।

प्रश्न – आखिर भगवान आत्मा को निर्मल पर्याय से पार देखने की आवश्यकता ही क्या है ? पर्याय निर्मल है, ज्ञानस्वभाव के अनुरूप है, अनुकूल है, सुखमय है, आनंदस्वरूप है; इसे पृथक् करने की आवश्यकता ही क्या है ? आत्मा में केवलज्ञान की, सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्चारित्र और अतीन्द्रिय आनंद की पर्याय है; इसे पृथक् करने की आवश्यकता ही क्या है ?

उत्तर – अतीन्द्रिय आनंद अनंतकाल तक कायम रहे; इसके लिए निर्मल पर्याय से भी भिन्न भगवान आत्मा को जानना अत्यन्त आवश्यक है। यदि आत्मा को पर्याय से भिन्न नहीं जानेंगे तो अनंतकाल तक आनंद नहीं रहेगा। आनंद उत्पन्न ही नहीं होगा तो उसके अनंतकाल तक रहने का प्रश्न ही कहाँ उपस्थित होता है। यदि एक समयवर्ती पर्याय में इस जीव ने अपनापन किया अर्थात् 'ये मैं हूँ' – ऐसा माना तो इस जीव को निगोद जैसा अनंत दुःख इसी समय प्राप्त होगा।

निगोद में अधिक दुःख क्यों है ? नरकगति में तो भूख–प्यास, गर्मी–सर्दी के दुःख हैं। आलू में अनंत निगोदिया जीव रहते हैं; लेकिन उस आलू को तो ए॰सी॰ (कोल्डरूम) में रखा जाता है। उसे कैसा दुःख ? लेकिन निगोद में नरक से भी अधिक दुःख है; क्योंकि निगोद में प्रतिसमय मरण का दुःख है।

'एक श्वास में अठ–दस बार, जन्म्यो–मर्‌यौ–भर्‌यौ दुःख भार।'

उनका एक श्वास में 18 बार जन्म–मरण होता है। इसका अर्थ यह हुआ कि जन्मना और मरना – यही सबसे बड़ा दुःख है। अब इस जीव ने यदि पर्याय में एकता की तो वह पर्याय तो एक समयवर्ती है; अतः एक समय में ही नष्ट होगी; तब इस जीव को स्वयं के मरण जैसा ही दुःख होगा; क्योंकि उसमें उसने 'ये मैं हूँ' – ऐसा माना था; तब मैं ही नष्ट हुआ; ऐसा मानकर अनंत दुःखी होगा।

इस अनंत दुःख को मेटने का उपाय क्या है ?

एक तो यह उपाय है कि वह पर्याय अनंतकाल तक कायम रहे; कभी नष्ट ही न हो; पर यह उपाय तो कभी संभव नहीं है।

अतः वास्तविक उपाय इस पर्याय को अपना नहीं मानना ही है। इसलिए ज्ञानीजन पर्याय में एकत्वबुद्धि नहीं करते हैं। (क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

प्रेस विज्ञप्ति

भारत सरकार ने समाचार-पत्र/पत्रिकाओं के डाक पंजीयन के संबंध में राजपत्र, असाधारण, सं. 421 भाग-11 खण्ड-3 उपखण्ड (1) प्रभावी दिनांक 11.9.2002 के द्वारा भारतीय डाक घर नियमावली, 1933 में आगे और संशोधन करते हुए निम्न प्रावधान नियत किये गये हैं -

1. जिस वर्ष में प्रथम पंजीकरण किया गया था, उसके तीसरे कैलेण्डर वर्ष के 31 दिसम्बर तक यह लागू रहेगा। पंजीकरण का प्रत्येक उत्तरवर्ती नवीकरण तीन कैलेण्डर वर्षों के लिए लागू रहेगा।

2. पंजीकरण के नवीकरण के लिए आवेदन इसप्रकार किया जाये कि वह पिछले पंजीकरण की समाप्ति की तारीख से कम से कम तीन महिने पहले संबंधित अधिकारी को मिल जाये और इसके साथ समाचार-पत्र के प्रकाशन के नवीनतम अंक की दो प्रतियाँ संलग्न होनी चाहिए।

3. पिछले पंजीकरण की अवधि के अंतिम महिने के पूर्ववर्ती तीसरे कैलेण्डर महिने के अंतिम कार्य दिवस के बाद प्राप्त नवीकरण के प्रत्येक आवेदन के लिए पचास रुपये एवं जिनमें नवीकरण हेतु आवेदन पिछले पंजीकरण की समाप्ति की तारीख के बाद प्राप्त होता है, एक सौ रुपये का विलम्ब शुल्क प्रभारित किया जायेगा।

4. नवीकरण तभी प्रदान किया जायेगा, जब प्रिन्सिपल चीफ पोस्ट मास्टर जनरल या अन्य सक्षम अधिकारी इस बात से संतुष्ट हो जाते हैं कि अधिनियम की धारा-9 की उपधारा-2 के उपबंधों की पूर्ति होती है और जहाँ पंजीकरण नवीकृत करने से पहले पिछला पंजीकरण समाप्त हो जाता है, वहाँ नवीकरण जारी करने तक प्रकाशन के लिए बुक पैकेट दरों पर भुगतान पेशगी में अदा करना होगा।

5. अत: सभी समाचार-पत्र/पत्रिकाओं के प्रकाशकों/सम्पादकों को सूचित किया जाता है कि अपने प्रकाशन के डाक पंजीयन/ नवीनीकरण हेतु इस बार दिनांक 21 अक्टूबर, 2002 तक निर्धारित प्रारूप में आवेदन-पत्र इस कार्यालय को प्रस्तुत करें, ताकि प्रकरण अनुमोदनार्थ परिमंडल कार्यालय को भेजे जा सकें। **(अम्बेश उपमन्यु)**

आई. पी. एस.

प्रवर अधीक्षक डाक घर, जयपुर नगर मंडल, जयपुर

प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड की शीतकालीन परीक्षा जनवरी 2003 के खाली प्रवेश फार्म सम्बन्धित सभी परीक्षाकेन्द्रों को भेजे जा चुके हैं। कृपया केन्द्राध्यक्ष उन्हें तत्काल भरकर भिजवा देवें।

कदाचित् जिन परीक्षाकेन्द्रों को डाक की गड़बड़ी से प्रवेशफार्म नहीं मिल सकें हो तो वे कृपया परीक्षा बोर्ड कार्यालय को पत्र द्वारा सूचित करके मँगा लेवें। **- प्रबन्धक, परीक्षा बोर्ड कार्यालय**

ए-4, बापूनगर, जयपुर-15

'भगवान महावीर की दृष्टि में अहिंसा' का तमिल भाषा में अनुवाद

उच्च प्राथमिक संस्कृत विद्यालय साँभरलेक में प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत पण्डित धन्यकुमार जैन शास्त्री, जैनदर्शनाचार्य ने जिनधर्म और दर्शन के प्रचार की तीव्र भावना से ओतप्रोत होकर महान मनीषी डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल द्वारा लिखित **भगवान महावीर की दृष्टि में अहिंसा** नामक पुस्तक का तमिल भाषा में सरल-सुबोध एवं शुद्ध तमिल शब्दावलियों में अनुवाद किया एवं श्री चौरीलाल जैन ने उक्त पुस्तक को प्रकाशित करने में अपना विशेष आर्थिक सहयोग दिया।

ज्ञातव्य है कि यह पुस्तक हिन्दी, अँग्रेजी, गुजराती एवं मराठी भाषा में भी प्रकाशित है। विभिन्न भाषाओं में अब तक इसकी 1लाख 23 हजार प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

मुझे आशा और विश्वास है कि यह पुस्तक तमिल भाषा में अनूदित होने के बाद जैन अहिंसा के मार्ग को जन-जन में प्रचारित-प्रसारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। **- प्रबन्ध सम्पादक**

विचार गोष्ठी का आयोजन

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा आयोजित रविवारीय गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 29 सितम्बर को एक विचार गोष्ठी आयोजित की गई; जिसका विषय 'दशलक्षण के अनुभव' रखा गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशक, प्रख्यात मनीषी डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने की।

गोष्ठी में 20 वक्ताओं ने दशलक्षण पर्व के अपने खट्टे-मीठे अनुभव सुनाये। अन्त में अध्यक्षीय भाषण के रूप में डॉ. भारिल्लजी ने सभी छात्रों को जिनवाणी की योग्य विनय हेतु उपदेश दिया, साथ ही उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनायें दीं।

इस गोष्ठी के संयोजक चिन्मय जैन, पिड़ावा तथा संचालक मनोज जैन, अभाना थे। **- ऋषिराज जैन**

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) **अक्टूबर (द्वितीय) 2002**
आई. आर. / R. J. **3002/02**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 705581, 707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 704127